डा. किरण सिंह सेंगर
एसो. प्रो. – संस्कृत विभाग
श्री जे. एन. पी. जी. कालेज
लखनऊ

'ज्ञान' की सिद्धि के लिये उपयोगी
सूत्र –

स्वमोर्नपुन्सकात् – नपुन्सक लिङ्ग से परे सु और अम् का लोप हो।

अतोऽम् – ~~अ~~ ह्रस्व अकारान्त नपुन्सक लिङ्ग से परे सु तथा अम् के स्थान पर अम् आदेश होता है।

नपुन्सकाच्च – नपुन्सक लिङ्ग अंग से परे औङ् को शी आदेश हो

~~स्वादि~~ यचि भम् – सर्वनाम स्थानक को छोड़कर सु से कप् प्रत्यय पर्यन्त
(संज्ञा सूत्र) यकारादि अजादि प्रत्यय रहते पूर्व की भ संज्ञा होती है।

यस्येति च – (भ संज्ञक – इवर्ण, अवर्ण का लोप) ईकार और तद्धित प्रत्यय परे रहते भ संज्ञक अंग के इ और अ का लोप हो जाता है।

वा० औङः श्यां प्रतिषेधो वाच्यः –
औङ् को जो शी आदेश हुआ है वह ~~अतः~~ "यस्येति च" होने वाले लोप का निषेध ~~होता~~ करता है।

वार्तिककार – कात्यायन

Scanned with CamScanner

ज्ञान - अकारान्त नपुन्सकलिङ्ग की

सिद्धि —

ज्ञान प्रातिपदिक से प्रथमा विभक्ति एकवचन की विवक्षा में 'सु' प्रत्यय लाने पर बना—

ज्ञान + सु

चूँकि ज्ञान नपुन्सकलिङ्ग है अतः "स्वमोर्नपुन्सकात्" सूत्र से नपुन्सक० से परे सु को ~~अम्~~ लोप प्राप्त होता है।

इसे बाधकर अदन्त नपु० से ज्ञान से परे सु है अतः "अतोऽम्" सूत्र से सु को अम् आदेश हो जाता है—

ज्ञान + अम्

तब 'अमि पूर्वः' सूत्र से पूर्वरूप एकादेश होकर "ज्ञानम्" रूप सिद्ध होता है।

ज्ञाने —

ज्ञान प्रातिपदिक से प्रथमाविभक्ति द्वि० व० की विवक्षा में 'औ' प्रत्यय आने पर रूप बना—

ज्ञान + औ

यहाँ नपु० अंग ज्ञान

Scanned with CamScanner

से परे 'औ' प्रत्यय है अतः 'नपुंसकाच्च' सूत्र के 'औ' को 'शी' आदेश होकर रूप बना —

ज्ञान + शी

स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ सूत्र से शी में प्रत्ययत्व विधान किया गया। अनुबन्ध लोप करने पर रूप बना —

ज्ञान + ई

इस स्थिति में अनादि प्रत्यय ई के परे रहते 'यचि भम' सूत्र से ज्ञान की भ संज्ञा हुई। 'यस्येति च' सूत्र से ईकार परे होने से 'भ' संज्ञक अंग ज्ञान के अन्त्य वर्ण अकार का लोप प्राप्त होता है।

किन्तु तब 'औ' के स्थान पर शी आदेश होने के कारण 'यस्येति च' सूत्र से विधीयमान लोप का प्रतिषेध "औङः शसां प्रतिषेधो वाच्यः" वार्तिक से हो जाता है।

तदुपरान्त ज्ञान के अ के बाद ई है, उसे आद्गुणः सूत्र से गुण रूप एकार एकादेश होकर ज्ञाने रूप सिद्ध होता है।

Scanned with CamScanner

ज्ञानानि —

— × —

ज्ञान इस शब्द से प्रथमा विभक्ति बहुवचन की विवक्षा में जस् प्रत्यय लाने पर बना —

ज्ञान + ज्ञान + ज्ञान + जस्

"सरूपाणामेकशेष एकविभक्तौ" सूत्र से एक ज्ञान के शेष रहने पर बना —

ज्ञान + जस्

ज्ञान नपुन्सकलिंग है, उससे परे जस् है अतः जस् प्रत्यय को "जश्शसोः शिः" सूत्र से शि आदेश होकर रूप बना —

ज्ञान + शि

"शि सर्वनामस्थानम्" सूत्र से शि इस आदेश की सर्वनामस्थान संज्ञा हुई।

Scanned with CamScanner

"स्थानिवदादेशोऽनल्विधौ" सूत्र से शि में प्रत्यक्ष विधान किया।

तदुपरान्त 'शि' में स्थित आदि शकार को "लशकवतद्धिते" सूत्र से इत्संज्ञा की और उस इत्संज्ञक वर्ण का 'तस्य लोपः' सूत्र से लोप किया, रूप बना—

ज्ञान + इ

इस स्थिति में अजन्त नपुन्सक लिङ्ग ज्ञान से परे सर्वनाम स्थानसंज्ञक इ है अतः "नपुन्सकस्य झलचः" सूत्र से नपु० ज्ञान को नुमागम होता है। "मिदचोऽन्त्यात्परः" सूत्र से नुमागम (चूँकि नुम् — मित् है अतः) अन्त्य अच् से परे होकर रूप बना—

ज्ञान + नुम् + इ

नुम् में अनुबन्ध लोप करने पर बना—

ज्ञान + न् + इ

= ज्ञानन् + इ

तब "सर्वनामस्थानेचाऽसम्बुद्धौ"

Scanned with CamScanner

सूत्र से सम्बुद्धि-भिन्न सर्वनाम-स्थान 'व' परे होने के कारण नकारान्त अङ्ग 'ज्ञानन्' की उपधा 'अ' को दीर्घ (आ) होकर रूप बना -

ज्ञानान् + व

= ज्ञानानि

इस प्रकार ज्ञानानि रूप सिद्ध होता है।

ज्ञानेन -

ज्ञान इस शब्द से तृतीया विभक्ति एक वचन की विवक्षा में या प्रत्यय (विभक्ति) होने पर बना -

ज्ञान + टा।

'यस्मात्प्रत्ययविधिस्तदादि प्रत्ययेऽङ्गम्' सूत्र से ज्ञान की अङ्ग संज्ञा हुई। 'अङ्गस्य' सूत्र से अङ्ग का अधिकार आया। तत्पश्चात् "टाङसिङसामिनात्स्याः" सूत्र से तथा "यथासंख्यमनुदेशः समानाम्" सूत्र से

'टा' के स्थान पर 'इन' आदेश होकर रूप बना —

ज्ञान + इन

आद्गुणः सूत्र से अ+इ के स्थान पर गुण एकादेश होने पर बना —

ज्ञानेन

इस प्रकार 'ज्ञानेन' रूप सिद्ध होता है।

'ज्ञान' अकारान्त नपुंसकलिङ्ग है, इसके शेष रूप अकारान्त पुंल्लिङ्ग 'राम' की भाँति चलेंगे।

विशेष — आद्गुणः विधि सूत्र है।

अदेङ्गुणः संज्ञा सूत्र है।

गुण किसे कहते हैं? यह परिभाषित करता है। 'अ+इ' के स्थान पर 'ए' एकादेश होगा — यह निर्धारण 'स्थानेऽन्तरतमः' सूत्र से होता है।

Scanned with CamScanner

जश्शसोः शि — नपुन्सक लिङ्ग अंग से 'जस' और 'शस' प्रत्ययों के स्थान पर शि आदेश हो।

शि सर्वनामस्थानम् — यह संज्ञा विधायक सूत्र है। सुट् नपुन्सक लिङ्ग में सर्वनामस्थान संज्ञक नहीं होगे। अतएव 'शि' इस आदेश की सर्वनामस्थान संज्ञा होती है।

नपुन्सकस्य झलचः :—

सर्वनामस्थान परे रहते झलन्त और अजन्त नपुन्सक लिङ्ग अंग को नुमागम हो।

मिदचोऽन्त्यात्परः :— (नुमागम कहाँ हो! निर्देशित करने वाला सूत्र) अचों में जो अन्त्य अच् है, उससे परे मित् का आगम हो।

सर्वनामस्थाने चाऽसम्बुद्धौ —(उपधा को दीर्घ)

नकारान्त अंग की उपधा

को दीर्घ हो, सम्बुद्धिभिन्न सर्वनामस्थान परे रहते।

सम्बुद्धि :— एकवचनं सम्बुद्धि :— प्रथमाविभक्ति के एकवचन को सम्बोधन में (ए.व.) सम्बुद्धि संज्ञा होती है।

अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा — अलों में (स्वरों में) अन्तिम अल् से पूर्व का वर्ण उपधा संज्ञक होता है।
उदाहरणार्थ — 'चुर्' धातु में उपधा 'उ' है।
'लिख्' धातु में उपधा 'इ' है

अचोऽन्त्यादि टि — अचों में (स्वरों में) अन्तिम स्वर है, वह स्वर और उससे परे यदि कोई व्यञ्जन (हल्) हो तो अन्तिम स्वर सहित वह व्यञ्जन 'टि' कहलाता है।

उदाहरणार्थ — 'मनस्' इस शब्द में अन्तिम स्वर 'न' में स्थित अ है, उससे परे स् व्यञ्जन है, अत: 'अस्' की 'टि' संज्ञा होगी।
धनुष् — में उष् की टि संज्ञा।

बी. ए. द्वितीय वर्ष
चतुर्थ सेमेस्टर
(संस्कृत विषय हेतु)

Scanned with CamScanner